जनचेतना का प्रगतिशील कथा-मासिक

ISSN 2454-4450

मूल्य ₹ 75

हंस

जनवरी 2026

संपादक
संजय सहाय
•
प्रबंध निदेशक
रचना यादव
•
कार्यकारी संपादक
विवेक मिश्र
•
व्यवस्थापक/सह-संपादन सहयोग
वीना उनियाल
•
संपादन सहयोग
शोभा अक्षर
माने मकर्तच्यान(अवैतनिक)
•
प्रसार एवं लेखा प्रबंधक
हारिस महमूद
•
शब्द-संयोजन एवं रूपांकन
प्रेमचंद गौतम
•
ग्राफिक्स
साद अहमद
•
कार्यालय सहायक
किशन कुमार, दुर्गा प्रसाद
•
मुख्य प्रतिनिधि (उ.प्र.)
राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल
•
रेखाचित्र
मार्टिन जॉन, रोहित प्रसाद, टी.पी.पोद्दार, आस्था

कार्यालय
अक्षर प्रकाशन प्रा. लि.
4229/1, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-2
व्हाट्सऐप : 9717239112, 9560685114
दूरभाष : 011-41050047
ईमेल : editorhans@gmail.com
वेबसाइट : www.hanshindimagazine.in

मूल्य : 75 रुपए प्रति
वार्षिक रजिस्टर्ड : 1250 रुपए (व्यक्तिगत)
संस्था/पुस्तकालय : 1500 रुपए (संस्थागत)
वार्षिक पीडीएफ : 600 रुपए (व्यक्तिगत)
पीडीएफ : 700 रुपए (संस्थागत)
विदेशों में : 80 डॉलर
सारे भुगतान मनीऑर्डर/चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा अक्षर प्रकाशन प्रा. लि. (Akshar Prakashan Pvt. Ltd.) के नाम से किए जाएं.

हंस/अक्षर प्रकाशन प्रा.लि. से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे. अंक में प्रकाशित सामग्री के पुनर्प्रकाशन के लिए लिखित अनुमति अनिवार्य है. हंस में प्रकाशित रचनाओं में विचार लेखकों के अपने हैं. उनसे हंस की सहमति अनिवार्य नहीं है. साथ ही उनके मौलिक या अप्रकाशित होने का उत्तरदायित्व संपादक और प्रकाशक का नहीं है बल्कि यह दायित्व रचनाकार का है.

प्रकाशक/मुद्रक : **रचना यादव खन्ना** द्वारा अक्षर प्रकाशन प्रा.लि., 4229/1, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित एवं चार दिशाएं, जी-39/40, सेक्टर-3, नोएडा- 201301 (उ.प्र.) से मुद्रित. संपादक–संजय सहाय.

जनवरी, 2026

मूल संस्थापक : **प्रेमचंद : 1930**
पुनर्संस्थापक : **राजेन्द्र यादव : 1986**

पूर्णांक-471 वर्ष : 40 अंक : 6 जनवरी 2026

आवरण : पारुल तोमर

जनचेतना का प्रगतिशील कथा-मासिक

इस अंक में

संपादकीय
4. इम्प्रेशनिज़्म : एक क्रांति यह भी (भाग-2) : संजय सहाय

अपना मोर्चा
8. पत्र

न हन्यते
12. ये कौन लोग हैं जो रूह में उतर जाते हैं : गरिमा श्रीवास्तव
16. गोबिन्द प्रसाद को याद करते हुए : पंकज बिष्ट
18. श्रमजीवियों के हितैषी : जयनंदन

केदार लय
20. केदारनाथ सिंह : सम-स्वर स्वभाव : (अशोक वाजपेयी से पीयूष दईया की बातचीत)

मुड़ मुड़ के देख
26. घुसपैठिये : ओमप्रकाश वाल्मीकि ('हंस', मई 2000)

मोहन राकेश पर विशेष
31. तीसरे अंक का स्थगित नायक : राजेन्द्र यादव *('हंस', दिसंबर 1995)*
39. 'घर' का घर कहां है? : रश्मि रावत

कहानियां
44. करी पत्ते का पेड़ : प्रमोद द्विवेदी
50. सामान्य आदमी : शिवेन्दु श्रीवास्तव
56. टीन टिनी : ज्योति देशमुख
64. अब्बूजी के बाद : शहादत खान
72. अर्जी संख्या 39 : अहमद मसूद (फ़िलिस्तीनी कहानी) (अंग्रेजी से अनुवाद : यादवेन्द्र)

कविताएं
70. विधान गुंजन, निरंजन यादव, देवेश पथ सारिया
71. बंधु पुष्कर, रवीन्द्र स्वप्निल प्रजापति

यात्रा-वृत्त
78. कोलाज-ए-सफर : रामशरण जोशी

उपन्यास अंश
82. सोमालिया का यातनाघर : राजेन्द्र चन्द्रकान्त राय

लघुकथा
30. रोबोट : प्रदीप उपाध्याय

ग़ज़ल
25. अच्युतम यादव 43. इंदु मिश्रा किरण

परख
88. विस्मृत होते नायक की खोज : वंदना

साहित्यनामा
90. सृजन परिक्रमा : वर्ष 2025 : साधना अग्रवाल

रेतघड़ी
97

इम्प्रेशनिज़्म : एक क्रांति यह भी (भाग-2)

क्लॉड मोने के चित्र 'इम्प्रेशन, सनराइज़' से पेरिस में इम्प्रेशनिज़्म का उदय हुआ. इसी शीर्षक से शब्द चुराकर निंदा में आलोचकों ने इन चित्रों को इम्प्रेशंस भर बता दिया. फिर भी यह शब्द चित्रकारों को भा गया और इस पूरे कला आंदोलन को इम्प्रेशनिज़्म के नाम से जाना जाने लगा. इम्प्रेशनिस्टों का उद्देश्य सिर्फ राजसी, धार्मिक और ऐतिहासिक विषयों की पारंपरिक लीक को तोड़ना भर नहीं था. उनका मुख्य उद्देश्य तो आधुनिक जनजीवन और प्रकृति के धावक क्षणों को चित्रों में कैद करना था. जनजीवन को पारंपरिक तरीके से चित्रित करने में इम्प्रेशनिस्टों की कोई रुचि नहीं थी, न ही वे इसके अगुआ थे. जनजीवन के चित्रों को पहली बार उकेरने का श्रेय 16वीं सदी के डच-फ्लेमिश चित्रकार पीटर ब्रूगल (सही उच्चारण पीटर ब्राहोल) द एल्डर को जाता है. इस संदर्भ में पटना कलम की चर्चा भी आवश्यक है. अब इसे 18वीं-19वीं शताब्दी के कला समीक्षकों की भूल कहें या कला जगत की नाइंसाफी कि पटना कलम या कंपनी चित्रकला को आम जीवन के चित्रों की शुरुआत करने का श्रेय बरसों से दिया जाता रहा है. बंगाल में प्लासी की हार और उधर मुग़लिया सल्तनत के कमज़ोर पड़ते जाने के साथ-साथ मुग़ल मिनिएचर के कलाकार नए संरक्षक तलाश रहे थे. और कंपनी बहादुर ने इस भूमिका को बख़ूबी निभाया. उन्होंने इन चित्रकारों को अज़ीमाबाद (पटना) में पनाह दी और आम जीवन की चित्रकारी की उस धारा को जन्म दिया जो पटना कलम के नाम से मशहूर हुई. यह मूल रूप से मिनिएचर वॉटरकलर की चित्रकारी थी जिसे काग़ज़ पर, अभ्रक या फिर हाथी दांत की तख़्तियों पर उकेरा जाता था. इन चित्रों में एरियल या एटमोस्फियरिक पर्सपेक्टिव का ख़ूबसूरत प्रयोग दिखाई देता है, जिसके जनक लिओनार्दो दा विंची थे. ये चित्र ब्रिटिश और यूरोपियन बाज़ार की मांगों को पूरा करते थे. पटना कलम के कुछ चित्रकारों जैसे सेवक राम, शिवा लाल, हुलास लाल, शिव दयाल आदि को प्रचुर मात्र में नाम सम्मान मिला, किंतु इसके अधिकतर चित्रकार पटना कलम की छतरी के नीचे गुमनाम ही रहे.

एक इंडस्ट्री के तौर पर पटना कलम ने यहां के जनजीवन के चित्रों को वैश्विक स्तर पर मान्यता अवश्य दिलाई, साथ ही लघुचित्रकला की इस शाखा को भी जन्म दिया, किंतु अपनी तमाम विशेषताओं के बावजूद जनजीवन के चित्रों का श्रेय दो सदी पहले पैदा हुए पीटर ब्राहोल द एल्डर को ही दिया जाना चाहिए.

बहरहाल, पारंपरिक चित्रकला (सलों पेंटिंग) के प्रशंसकों को इम्प्रेशनिस्ट चित्र ख़ूबसूरती के ख़िलाफ़ एक जंग की तरह दिखाई